ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

इस्लाम और वैदिक धर्म

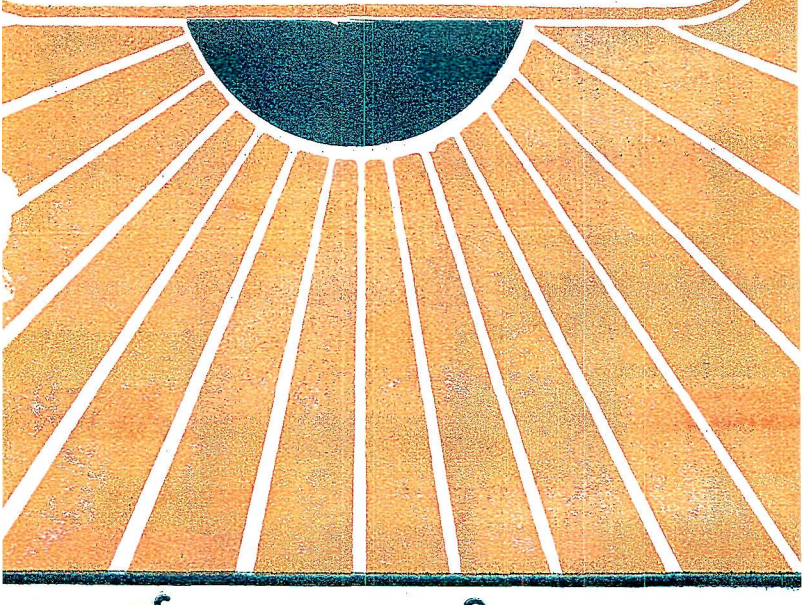

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी प्रकाशन

प्रकाशक - आर्य समाज, अजमेर

मूल्य
८० पैसे

आचार्य दत्तात्रेय वाड्ले द्वारा सम्पादित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ-माला के १५ पुष्प और उनके लेखक :—

भाग	विषय	लेखक का नाम	मूल्य
१.	ईश्वर एक है, नाम अनेक	प्रो. बुद्धिप्रकाश आर्य	.६०
२.	आदर्श माता-पिता	प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु	.४०
३.	शिक्षा और चरित्र निर्माण	प्रो. भूदेव शास्त्री	.७०
४.	गृहस्थाश्रम का महत्व	आचार्य ओंकार मिश्र प्रणव	.७०
५.	सन्यासी कौन और कैसे हो ?	रासासिंह विद्यावाचस्पति	.४०
६.	राज्य व्यवस्था	प्रो. प्रशान्तकुमार वेदालंकार	१.१०
७.	ईश्वर और वेद	डॉ. सूर्यदेव शर्मा, एम.ए.डी. लिट	१.००
८.	जगत की उत्पत्ति	डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	.७०
९.	स्वर्ग और नरक कहाँ है ?	सिद्धान्त भास्कर पं. यशपाल आर्य बन्धु	.६०
१०.	चौके चुल्हे में धर्म नहीं है ?	प्रो. देव शर्मा वेदालंकार	.६०
११.	हिन्दू धर्म की निर्बलता	प्रो. भवानीलालजी भारतीय	.६०
१२.	बौद्ध और जैन मत	पं. मन्जुनाथ शास्त्री ।	.५०
१३.	वेद और ईसाई मत	श्री रामस्वरूप रक्षक	.५०
१४.	इस्लाम और वैदिक धर्म	डॉ. श्रीराम आर्य	.८०
१५.	सत्य का अर्थ तथा प्रकाश	प्राचार्य दत्तात्रेय वाड्ले	.५०
			१०.००

अन्य प्रकाशन

देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन

—प्राचार्य दत्तात्रेय वाड्ले

नोट:—५० या अधिक प्रतिया. एक साथ मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन ।

प्राप्ति स्थान

आर्य समाज, अजमेर

डॉ० भवानी लाल भारतीय
पुस्तकालय
विषय 222

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला–भाग १४

इस्लाम और वैदिक धर्म

लेखक :
डॉ० आचार्य श्रीराम शर्मा
कासगंज

सम्पादक :
दत्तात्रेय वाब्ले
भू० पू० प्रिंसिपल, दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज, अजमेर

प्रकाशक : आर्य समाज, अजमेर

शताब्दी वर्ष १९८१ } प्रतियाँ ५००० { मूल्य ८० पैसे

डॉ. सूर्यदेव शर्मा का प्रशंसनीय अनुदान

आर्य समाज के जाने माने विद्वान और प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री तथा आर्य समाज अजमेर के दीर्घ कालीन यशस्वी मन्त्री डॉ. सूर्यदेव शर्मा शास्त्री साहित्यालंकार, एम ए, एल टी, डी लिट ने १९८१ में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर इस ग्रन्थ माला के प्रथम संस्करण के लिये १२ हजार रुपये तथा आर्य समाज अजमेर की १९८२ में शताब्दी के उपलक्ष में प्रकाशित इस द्वितीय संस्करण के लिये १० हजार रुपये, इस प्रकार कुल २२ हजार (बाईस हजार रुपये) रुपये की राशि दान में देकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में अनुकरणीय सहयोग दिया है। आर्य-समाज अजमेर और मैं अपनी ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

(दत्तात्रेय वाडले)

प्रधान

आर्य समाज: अजमेर

प्रस्तावना

भिन्न भिन्न आर्थिक और राजनैतिक विचारधाराओं के समान धार्मिक मान्यताओं और विश्वासों का विवेचन भी विचार स्वतन्त्रता और मानव प्रगति के लिये आवश्यक है। राज्य और धर्म की पृथकता का सिद्धान्त आधुनिक और तर्कसंगत होने पर भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धार्मिक मान्यताएं और रीति रिवाज हमारे राजनैतिक, सार्वजनिक और विशेषकर सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित किये बिना नहीं रहते। इसलिए धार्मिक तथा सामाजिक अंध विश्वासों की हम उपेक्षा नहीं कर सकते इस्लाम के अनुसार तो धर्म यानी चर्च को राज्य या स्टेट से अलग किया ही नहीं जा सकता।[1]

ऋषि दयानन्द की देन

धार्मिक जगत् को महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने "मजहब में अकल को दखल नहीं"—की पुरानी मान्यता को अस्वीकार करके धार्मिक क्षेत्र में भी तर्क और बुद्धि को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसी आधार पर स्वामीजी ने पहले अपने निकट पूर्वजों के हिन्दू धर्म के गुण दोषों का विवेचन किया और उसके बाद ईसाई तथा इस्लाम आदि अन्य धर्मों के सत्यासत्य की समीक्षा की। अनेक देवी देवताओं की पूजा तथा उनकी मूर्तियों की उपासना जैसे धार्मिक अन्ध विश्वास और जात पाँत, छुआछूत, स्त्री और शूद्रों के साथ असमानता की जो सामाजिक बुराइयां उसमें आ गई थीं और जिन के कारण हिन्दू समाज निर्बल होकर अन्य धर्मों के उपहास और आक्रमण का आसानी से शिकार होता था, उन सब का उन्होंने साहसपूर्वक विरोध किया और वह भी इस आधार पर कि यह बातें वेद विरुद्ध हैं। इस प्रकार अनिश्चित हिन्दू धर्म के स्थान में निश्चित, सरल और बुद्धिगम्य वैदिक धर्म देकर उसके दरवाजे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सब के लिये खोल दिये। परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं पर आक्रमण-

---

[1] 'मोहम्मद' पृष्ठ 39-लेखक-अहमद शफी (नटेसन) :

कर्ताओं के हाथ से उनका सबसे बड़ा अस्त्र स्वामीजी ने छीन लिया और उनकी धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों के लिये उन्हें स्वयं अपनी रक्षा की चिन्ता करने के लिये विवश कर दिया। भारत की आधुनिक धर्म निर्पेक्ष राज्य व्यवस्था में स्वामी दयानन्द के ये सब योगदान विशेष महत्व के सिद्ध होंगे क्योंकि उन्होंने हिन्दू धर्म को भी वैदिक धर्म के रूप में वैसा ही संगठित और सुनिश्चित बनाकर अन्य धर्मों के साथ समानता करने के योग्य बनाने का प्रयत्न किया। समान रूप से सशक्त और अपनी रक्षा में समर्थ धर्मों के बीच ही धर्म निर्पेक्षता और धर्म समभाव सफल हो सकता है। निर्बल और बलवान की समानता अव्यवहारिक है। इसीलिये कहा गया है कि "देवो दुर्बलघातकः" धर्म निर्पेक्ष भारत के गत 34 वर्षों के अनुभव से हिन्दू बहु संख्या में होने पर भी स्वयं अपनी धार्मिक और सामाजिक दुर्बलताओं के कारण ईसाई और इस्लाम जैसे अल्प संख्यक किन्तु अधिक संगठित धर्मों के आक्रमणों से अपनी रक्षा तक करने में असफल रहे हैं। मीनाक्षिपुरमः के सामुहिक धर्म परिवर्तन से यह बात स्पष्ट है। तुलनात्मक दृष्टि से भी अनिश्चित हिन्दू धर्म की एक बड़ी निर्बलता उसका व्यक्तिवादी दृष्टिकोण रहा है। इसलिये अपने धर्म का प्रचार और प्रसार करने की वह आवश्यकता अनुभव नहीं करता। उसके कुछ समर्थक इसे हिन्दू धर्म की उदारता और विशेषता समझते हैं कि वह अन्य धर्मावलंबियों को अपने धर्म में धर्मान्तरण करने में विश्वास नहीं करता। इस सबका परिणाम यह है कि जहां सैकड़ों हिन्दू नियमित रूप से अन्य धर्म स्वीकार करते हैं, वहां अन्य धर्मों के अनुयाइयों के चाहने पर भी हिन्दू उन्हें अपने धर्म में आसानी से सम्मिलित नहीं कर पाते।

तुलनात्मक अध्ययन

ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज ने वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार एवं उसमें अन्य धर्मों के प्रवेश का प्रारम्भ अवश्य किया, किन्तु बाद में उसकी अपनी निष्क्रियता और हिन्दू समाज की जाँत पाँत के कारण इसमें उसे अधिक सफलता नहीं मिली यह सही होने पर भी, आर्य समाज का यह

कार्य चिरस्मरणीय रहेगा। उसने न केवल हिन्दुओं की ढाल का ही कार्य किया अपितु उस पर आक्रमण करने वाले धर्मों को स्वयं अपनी रक्षा करने के लिये भी मजबूर किया और उन्हें यह अनुभव कराया कि स्वयं काँच के घर में बैठकर दूसरों पर पत्थर फेंकना उनके लिये भी महंगा पड़ सकता है। वर्तमान पुस्तिका सत्यार्थ प्रकाश के 14 वें समुल्लास पर आधारित है जिसमें उपरोक्त सन्दर्भ में इस्लाम धर्म का विश्लेषण किया गया है, और यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि तोहीद अर्थात् एकेश्वरवाद और बुत परस्ती अर्थात् मूर्ति पूजा के निषेध की जिन विशेषताओं की दुहाई देकर मुसलमान प्रचारक हिन्दू धर्म से अपनी श्रेष्ठता का दावा करते हैं, वे वास्तविक नहीं हैं। इस दृष्टि से वेद का एकेश्वरवाद और मूर्ति पूजा आदि का निषेध अधिक वास्तविक हैं। इस पुस्तिका के विद्वान् लेखक आचार्य डॉ. श्रीराम आर्य ने कुरान और इस्लाम का शोध पूर्वक अध्ययन किया है और दोनों पर अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। सत्यार्थ प्रकाश के 14 वें समुल्लास पर आधारित इस पुस्तिका में लेखक ने न केवल कुरान के ईश्वरीय ज्ञान होने के दावे को चुनौती दी है बल्कि यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि कुरान में ईश्वर, जीव, सृष्टि की उत्पत्ति सम्बन्धी बातें वैज्ञानिक जानकारी से अनभिज्ञता पर आधारित हैं। इसी प्रकार उसकी शैतान कयामत, जन्नत और दोजख सम्बन्धी कल्पनायें भी एकेश्वरवाद और भौगोलिक वास्तविकता के विपरीत हैं। लेखक ने यह बताने का भी प्रयत्न किया है कि अपने मजहब के प्रचार और प्रसार में तलवार, युद्ध और राज्य जैसे हिंसा और शक्ति पर आधारित साधनों का उपयोग करना भी इस्लाम अनुचित नहीं समझता।

इस पुस्तिका को पढ़ने के बाद उपरोक्त सब बातों के सम्बन्ध में पाठक स्वयं अपनी सम्मति बनाने में स्वतन्त्र है, किन्तु स्वाधीन भारत में भी हिन्दू मुस्लिम समस्या और उसके गम्भीर दुष्परिणामों पर मैं निम्नलिखित शब्दों में अपनी आशंका और आशा प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूं।

इस्लाम में सुधार आंदोलन

निकट सम्भावना से दूर प्रतीत होने पर भी मैं तथा भारतीय मुसलमानों के मेरे जैसे सच्चे शुभ चिन्तक यह आशा कर सकते हैं कि भारत के मुसल-

मानों में भी उनमें से ही कोई ऐसा धार्मिक और सामाजिक क्रान्तिकारी सुधारक उत्पन्न होगा जो इस्लाम का कोई ऐसा आधुनिक तर्क संगत और प्रगतिशील संस्करण प्रस्तुत करेगा जैसा दयानन्द ने हिन्दू धर्म का वैदिक धर्म के रूप में किया है तभी सम्भवतः हमारे देश के मुसलमान वास्तविक अर्थों में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता की मुख्य धारा में सम्मिलित होकर सच्चे अर्थों में धर्म निर्पेक्षता का पालन कर सकेंगे और साथ ही आधुनिक विचारधारा से लाभ उठाकर एक सुखी, सम्पन्न और प्रगतिशील समाज के अंग बनकर संसार के अन्य इस्लामी देशों का भी मार्ग दर्शन कर सकेंगे। इस दिशा में महाराष्ट्र के स्व. हमीद दलवई ने "मुस्लिम सत्य शोधक समाज" की स्थापना करके जो शुभारम्भ किया था उसका सर्वत्र स्वागत होना चाहिये।

सम्पादक

इस्लाम और वैदिक धर्म

इस्लाम धर्म में ३१३ सम्प्रदाय हैं जो सभी कुरान शरीफ को अपना धर्मग्रन्थ स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द ने अन्य ग्रन्थों को छोड़कर केवल कुरान को ही इस्लाम धर्म की समीक्षा का आधार बनाया है। मुसलमान मत को सत्यासत्य की कसौटी पर कसने से पूर्व ऋषि ने अपनी भावनायें इन शब्दों में प्रकट कर दी हैं जिससे उनकी सद्भावना और सहृदयता झलकती है। वह कहते हैं "क्योंकि यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिये है, अर्थात् सब मतों के विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे। इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें"।

आज तक किसी मुसलमान विद्वान् या मौलवी ने स्वामीजी द्वारा कुरान की की गई समीक्षा का तर्क पूर्ण खण्डन या उत्तर प्रकाशित नहीं किया। सिर्फ हत्यायें करने, धमकियां देने का प्रयत्न अवश्य किया है।

कुरान शरीफ को देखकर महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि इस ग्रन्थ पर अन्ध विश्वास के कारण असंख्य लोग इस भ्रम में हैं कि यह ईश्वरीय ग्रन्थ है। अतः उन्होंने कुरान की ही १५९ अन्तः साक्षियों के आधार पर उन पर तर्क पूर्ण समीक्षायें, सत्यार्थ प्रकाश

के चौदहवें समुल्लास में उपस्थित करके जनता के सामने इस मान्यता का परीक्षण किया है।

कुरान की स्थिति

कुरान शरीफ का निर्माण हुये लगभग १५०० वर्ष हो चुके हैं। इस्लाम मतानुयायी लोगों का विश्वास है कि कुरान की आयतें जिब्रील नाम के फरिश्ते द्वारा खुदा हज़रत मुहम्मद साहब पर भेजा करता था और वे उनको लिख लिया करते थे। कालान्तर में इन सबका संग्रह किया गया और वह संग्रह ही कुरान शरीफ के रूप में विद्यमान है।

कुरान की आयतें एक साथ एक ही समय में नहीं आईं। उनका सिलसिला २३ वर्ष के लम्बे अर्से तक चलता रहा था। स्वयं कुरान में भी इसके समर्थन में अनेक आयतें मिलती हैं। कुरान में तीस सिपारे हैं, जिनमें ११४ सूरते हैं और कुल ६२३६ आयतें हैं। शिया सम्प्रदाय की मान्यता है कि कुरान में प्रारम्भ में ४० सिपारे थे। आज भी भारत में पहले कई सौ वर्ष पुराना ४० सिपारे का कुरान एक स्थान पर विद्यमान है।

कुरान के मर्मज्ञ स्व० पं० लेखरामजी आर्य मुसाफिर के अनुसार कुरान की छः हजार से अधिक आयतों में से मानव कल्याण तथा ईश्वर आदि आध्यात्मिक विषय की केवल एक दो सौ से अधिक आयतें कुरान में नहीं हैं। अधिकांश आयतें समय-समय पर मोहम्मद साहब को जैसी आवश्यकता हुई या स्थिति उनके सामने उत्पन्न हुई उसके अनुसार बनाई गईं।

इस्लाम में एकेश्वरवाद

कुरान में "ला इलाहाइल्लिल्लाह" अर्थात् खुदा के अतिरिक्त और कोई खुदा नहीं है, यह घोषणा की गई है किन्तु उसके साथ मोहम्मद रसूले अल्लाह यह जोड़कर लाशरीक खुदा के साथ मोहम्मद साहब को भी शरीक कर दिया गया है। केवल खुदा या ईश्वर पर विश्वास करने वाले व्यक्ति तब तक मुसलमान नहीं हो सकते जब तक कि वे मोहम्मद साहब पर भी विश्वास न करें। एक मुसलमान कवि ने तो यहां तक कहा है कि "कसम है खुदा की खुदाई न होती अगर मोहम्मद की जलवेनुमाई न होती" कुरान में जगहजगह स्वयं अल्लाह ने भी उसके रसूल मोहम्मद पर ईमान लाने का आदेश दिया है।

खुदा और शैतान

इस्लाम का एकेश्वरवाद शैतान को चुनौती के कारण भी वास्तविक नहीं है। शैतान को भी लगभग ईश्वर के समान शक्ति सम्पन्न माना गया है और तभी वह खुदा की आज्ञा की अवहेलना करने में समर्थ है। ऋषि दयानन्द ने वेद के आधार पर एकेश्वरवाद की जो कल्पना की है, उसमें ईश्वर सर्व शक्तिमान है और इसलिये उसकी अवज्ञा करने में समर्थ किसी शैतान के लिये उसमें कोई स्थान नहीं है और न किसी पैगम्बर, मसीहा, दूत, फरिश्ते, अकेले बेटे, अवतार अथवा गुरु की मध्यस्थता की ही कोई आवश्यकता है। वेद के परमात्मा की अनुभूति मानव स्वयं अपनी आत्मा से ही कर सकता है। दूसरे की मध्यस्थता से नहीं।

बुत परस्ती

स्वयं मोहम्मद साहब की स्थिति व्यवहार में हिन्दुओं के ईश्वर के अवतार से भिन्न नहीं है और इस प्रकार उसमें मूर्ति पूजा ही

नहीं मनुष्य पूजा का भी समावेश है। मक्का की हज यात्रा तथा वहां के कवि के एक काले पत्थर (संगे असवत्) की चुम्बन पूजा अरबों की देवी देवताओं तथा मूर्तियों की तीर्थ यात्रा का ही अवशेष है यह स्वयं मुसलमान स्वीकार करते हैं, दूसरी ओर स्वामी दयानन्द और उनका आर्य समाज कहीं अधिक वास्तविक अर्थों में बुतपरस्ती का विरोध करता है। शायद इसीलिए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक "डिसकवरी ऑफ इन्डिया (१९६४ के संस्करण) के पेज ३५५ पर यह लिखा था कि आर्य समाज इस्लाम के निकट (अर्थात् समान) है।

धर्मों का स्रोत

कुरान शरीफ अपने से पहली धर्म पुस्तकों (तौरात, जबूर और इञ्जील) को भी खुदाई किताबें मानता है। उन किताबों को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी लगभग सभी सामग्री कुरान में ले ली गई है। स्वयं कुरान में भी लिखा है कि वह उन किताबों की व्याख्या (तफसील) मात्र है। वस्तुतः बात भी यही है कि कुरान यदि उन पहली पुस्तकों को जो यहूदी व ईसाई सम्प्रदाय को मान्य थीं अमान्य कर देता तो उसका भारी विरोध किया जाता। कुरान में वर्णित सभी महापुरुष ऐतिहासिक घटनायें व स्थान ज्यों के त्यों बाइबिल में पहले ही से विद्यमान हैं। ऐसी कोई भी नई महत्वपूर्ण बात उसमें नहीं है जो पहले से पुरानी पुस्तकों में न हो। श्री गंगा-प्रसादजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दी फाऊन्टेन हेड ऑफ रिलीजन" जिसका हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध कवि और सम्पादक श्री हरिशंकरजी शर्मा ने "धर्म का आदि स्रोत" इस नाम से किया है, उसमें विद्वान् लेखक ने इन सब धर्म ग्रन्थों के उद्धरण देकर यह

सिद्ध किया है कि मुसलमानी मत का मुख्य आधार यहूदी मत और ईसाई मत है। ज़न्नत, दोज़ख़, क़यामत, फ़रिश्ते, खुदा का जन्नत में निवास, दुनियाँ बनाने का खुदा का समय, खुदा के यहां लोगों के कर्मों के रजिस्टर होना, आदम हव्वा से मनुष्य जाति की उत्पत्ति, शैतान की उत्पत्ति और खुदा से उसका झगड़ा, कयामत के दिन पैगम्बरों के द्वारा अपने अनुयायियों को क्षमा दिलाना, विरोधियों को दोजख की भट्टियों में झोंकना आदि सभी स्थानों में लगभग एक जैसा ही बर्ताव मिलता है। खुदा का संसार को ६ दिन में बनाकर फिर सातवें दिन आराम करना वा थकावट मिटाने का वर्णन सभी में एक जैसा है। खुदा की जो व्याख्या पुरानी पुस्तकों में व कुरान में मिलती है, उसमें यहूदी, ईसाई व मुसलमानों का खुदा सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, सर्वाधार, सर्वेश्वर आदि गुणों वाला न होकर साधारण मनुष्य के समान साबित किया गया है।

कुरान में बहुत सी आयतों का संशोधन भी किया जाता रहा है। १६२ आयतें निरस्त कर दी गई हैं। तथा उनके स्थान पर नई आयतें बनाकर रख दी गई हैं और इस विषय में कई स्थानों पर स्वयं खुदा की ओर से भी कहा गया है कि आयतों को बदल कर नई रख देने का रहस्य खुदा ही जानता है। इस प्रकार कुरान की प्रामाणिकता पर स्वयं कुरान ने ही सन्देह को जन्म दिया है। कुरान में बहुत से स्थलों में परस्पर विरोध दावे वा उपदेश हैं। बहुत सी आयतें प्रत्यक्ष विज्ञान एवं बुद्धि विरुद्ध वर्णनों से भरी हुई हैं। अनेक स्थल ऐसे भी हैं जो कुरान को खुदाई कलाम साबित नहीं होने

देते हैं। अनेक स्थल खुदा के स्वयं पक्षपाती व अन्य सम्प्रदाय वालों को शत्रु घोषित करते हैं। अनेक खुदा की पवित्र सत्ता को अन्यायकारी तथा अल्पज्ञ साबित करते हैं। अनेक स्थल ऐसे भी हैं जो पुरानी खुदाई किताबों के विरुद्ध हैं जब कि यदि वे खुदाई हैं तो उनमें विरोध संभव नहीं होना चाहिये था क्योंकि एक राजा का एक ही कानून होता है और उसमें परस्पर विरोध नहीं होता है।

इस्लाम अन्तिम कैसे ?

मुसलमानों का सबसे विचित्र और आश्चर्यजनक दावा यह है कि कुरान से पहले की सब धर्म पुस्तकें और मोहम्मद साहब से पहले के सारे पैगम्बर खुदा ने निरस्त कर दिये और अब सदा के लिये कुरान अन्तिम धर्मग्रन्थ और मोहम्मद साहब आखरी पैगम्बर हैं। इस संसार को बने लाखों वर्ष हो गये किन्तु इससे पूर्व खुदा द्वारा भेजे गये पैगम्बर ईश्वर ने यदि अब अयोग्य और अनाधिकृत घोषित कर दिये तो वह इस बात का प्रमाण है कि खुदा सर्वज्ञ न होकर इन्सानों की तरह गलतियाँ करता है। पहले की धर्म पुस्तकों को खारिज करने के बारे में भी ईश्वर पर इसी प्रकार का दोष लगाया जा सकता है। एक दूसरा प्रश्न यह है कि सेमिटिक अर्थात् अरब मुल्कों का सबसे पुराना धर्मग्रन्थ जिन्दावस्था तीन हजार वर्ष से अधिक पुराना नहीं है। ऐसी स्थिति में क्या खुदा ने कोई किताब या पैगम्बर नहीं भेजा और यदि नहीं भेजा तो उस समय तक संसार के मनुष्यों के लिये धर्म, पाप, पुण्य, स्वर्ग, नरक की किस आधार पर व्यवस्था की गई थी। इस्लाम की ये सब मान्यताएं इस अज्ञानता पर आधारित हैं कि सृष्टि को बने

कुछ ही हजार वर्ष हुये हैं। सेमेटिक धर्म जहां उत्पन्न हुआ वहां के लोगों को शायद इस बात का ज्ञान तक नहीं था कि सबसे पहले की ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक वेद है। कुरान द्वारा उसे निरस्त नहीं किया गया है।

नटेशन कम्पनी मद्रास द्वारा अहमद शफी और याकूब हसन साहब द्वारा हजरत मोहम्मद के जीवन और शिक्षा पर प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक के पृष्ठ ५२ पर यह स्वीकार किया गया है कि कुरान के अध्याय १४-४ में खुदा ने कहा है कि हमने कोई ऐसा पैगम्बर नहीं भेजा जो अपने साथियों की भाषा न जानता हो और जिसके द्वारा वह उन्हें शिक्षा न दे सके। जहां तक कुरान का सम्बन्ध है, वह केवल एक अरब देश की भाषा में है और इसलिए केवल वहीं के निवासियों के लिए है। सारे संसार के लिए दिया गया ईश्वरीय ज्ञान या किताब केवल किसी एक जाति या देश विशेष की भाषा में प्रकट नहीं हो सकती जैसा स्वयं खुदा ने ऊपर कहा है।

स्वयं मोहम्मद साहब का जीवन और ज्ञान उनके अर्ध सभ्य समय की दृष्टि से कितना ही अच्छा रहा हो, यह कैसे कहा जा सकता है कि उसके बाद आज लगभग पन्द्रह सौ वर्षों में मनुष्य की जानकारी और ज्ञान में कोई उन्नति और विकास नहीं हुआ है। यह कहना तो और भी आश्चर्यजनक होगा कि भविष्य में भी कोई महापुरुष मोहम्मद साहब से अधिक जानकार और धर्मात्मा नहीं हो सकता। कुरान में यह बात शायद इसलिये लिखी गयी है कि उसके अनुसार जल्द ही कयामत आने वाली थी किन्तु वर्तमान

वैज्ञानिकों के अनुसार अभी यह सृष्टि और मनुष्य जाति लाखों करोड़ों वर्ष तक रहेगी, इसलिए अभी से ज्ञान, धर्म, बुद्धि, चरित्र, सभ्यता और संस्कृति सब कुछ सदा के लिए छठी सदी के कुरान में सील बन्द करके नहीं रक्खा जा सकता। ऐसा करना अनादि, अनन्त और सर्वज्ञ ईश्वर का भी अपमान है जो स्वयं एक कुफ्र या नास्तिकता है।

तलवार की परम्परा

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो मोहम्मद साहब के प्रादुर्भाव के समय अरब की धार्मिक और सामाजिक स्थिति कुछ वैसी ही थी जैसी ऋषि दयानन्द के आगमन के समय हिन्दुओं की। मोहम्मद साहब ने अपने सादे जीवन और दृढ़ संकल्प के आधार पर अनेक देवी देवताओं की पूजा करने वाले तथा सामाजिक कुरीतियों और आपसी कलह के कारण बंटे हुये अरबों के कबीलों को इस्लाम के रूप में एक नवीन धर्म दिया। परिणाम स्वरूप रेगिस्तान प्रदेश के ये पिछड़े हुए लोग संगठित होकर नई प्रेरणा से अनुप्राणित हो गये। और मजहब और दीन के नाम पर सैनिकवाद और साम्राज्यवाद की महत्वाकांक्षाएं उनके धार्मिक युद्धों के आधार बन गये। जहां-तक अन्य प्राचीन और सभ्य देशों में इस्लाम के प्रसार का सम्बन्ध है, उसका कारण उसकी दार्शनिक या नैतिक श्रेष्ठता नहीं थी बल्कि अन्य देशों की सैनिक और सामाजिक व अन्य कमजोरियां और परिस्थितियां थीं। स्वयं मोहम्मद साहब ने इस्लाम के नाम पर अनेक लड़ाईयाँ लड़ीं जिनको जिहाद अर्थात् धार्मिक युद्ध कहा गया। कुरान की आयतों से स्पष्ट है कि अपने दीन के प्रचार और

प्रसार के लिये इस्लाम हिंसा और तलवार का उपयोग करने का समर्थन करता है। उसके बल पर राज्य स्थापना के बाद पराजित लोगों का धर्म परिवर्तन भी राज्य के दबाव या पद तथा प्रतिष्ठा आदि अन्य के प्रलोभन से होता रहा। एक बार इस्लाम स्वीकार करने के बाद उनके वंशजों द्वारा अपने जन्म जात धर्म का पालन करते रहना स्वाभाविक था। स्वयं भारत के लगभग सभी मुसलमान ऐसे हिन्दू पूर्वजों के ही वंशज हैं।

सर मोहम्मद इकबाल का शिकवा

इस्लाम के प्रसिद्धि दार्शनिक और कवि सर मोहम्मद इकबाल ने अपनी 'शिकवा' नामक प्रसिद्ध कविता में इस्लाम में जिहाद की इस परम्परा की पुष्टि की है। कविता में मुसलमानों की तात्कालीन दुरावस्था की खुदा से शिकायत करते हुए वह लिखते हैं:—

हमसे पहले था अजब तेरे जहां का मंजर,
कहीं मस्जूद थे पत्थर, कहीं माबूद शजर॥ [1]
पर तेरे नाम पै तलव.र उठाई किसने ?
बात जो बिगड़ी हुई थी, यह बनाई किसने ? [2]
कौम अपनी जो जरोभाले-जहाँ पे मरती,
बुत-फरोशी के इवज बुत-शिकनी क्यों करती ? [3]
नक्श तौहीद का हर दिल पे बिठाया हमने,
जेरे-खंजर भी यह पैराम सुनाया हमने। [4]
तोड़े मखलूके-खुदावंद के पैकर किसने ?
काटकर रख दिये,कफ्फार के लश्कर किसने ? [5]

डा. मोहम्मद इकबाल के शिकवे और जवाब का श्री खुशवन्तसिंह द्वारा किया गया भाषान्तर। 1. पृष्ठ 31, 2. पृष्ठ 32, 3. पृष्ठ 34, 4. पृष्ठ 35, 5. पृष्ठ 36।

मध्ययुग की पुनरावृत्ति

इस्लाम धर्म और उसके खुदा का प्रचार करने के लिये मूर्तियों को तोड़ने, खुदा के नाम पर उठाने और खंजर के बल पर खुदा का पैगाम सुनाने तथा काफिरों की सेनाओं को काटने और नगरों को नष्ट करने के लिये किये गये इन सब रक्तपातों की परम्परा का इससे अधिक अधिकृत वर्णन और क्या हो सकता है? इस प्रकार जाहिर है कि रहमान और रहीम खुदा की दया और कृपा केवल इस्लाम और उसके रसूल मोहम्मद को मानने वाले तक ही सीमित है। यह ऐतिहासिक भूमिका इस्लाम के जन्म और विस्तार को ठीक प्रकार से समझने के लिये तो जरूरी है ही साथ ही मध्य पूर्व के अनेक मुस्लिम देशों तथा हमारे पड़ौसी पाकिस्तान तक में मध्य कालीन युग की धर्मान्धता की वर्तमान पुनरावृत्ति की भी परिचायक है। इतना ही नहीं स्वयं भारत में इसकी चेतावनी देने वाली गूंज प्रतिध्वनित होने लगी है। इस्लाम की जन्म भूमि और उसके पुराने साम्राज्य के अवशिष्ट देशों से प्रवाहित पेट्रोडालर की बाढ़ उतनी ही कारगर हो सकती है जितनी इस्लाम जिहाद के दिनों में उसकी तलवार। मीनाक्षिपुरम के सामुहिक धर्मान्तरण तथा दक्षिण हैदराबाद के धर्म प्रेरित दंगे इसका कुछ आभास देते हैं। प्रश्न इतना ही है कि क्या अपने पूर्व अनुभवों से शिक्षा लेकर इस देश के हिन्दू और राष्ट्रवादी मुसलमान खतरे की इस घन्टी को समय रहते सुन सकेंगे?

कुरान और ईश्वरीय ज्ञान

सम्पूर्ण कुरान को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह न तो खुदाई कलाम माना जा सकता है और न वह संसार भर के लोगों के कल्याण के लिये बनाया गया था। स्वयं कुरान में ही घोषित किया गया है कि उसकी रचना अरब निवासियों को इस्लाम में लाने के लिये लिखी गई थी और इसीलिये उसे सिर्फ अरबी जबान में बनाया गया था ताकि अरब वाले और खास कर मक्का और उसके आस-पास रहने वाले समझ सकें।

कुरान को ईश्वरीय ग्रन्थ होने का दावा स्वयं खुदा ने किया है। किन्तु कुरान में हम अन्यत्र कुछ स्थल ऐसे देखते हैं जिनसे उपरोक्त दावे की निःसारता स्पष्ट हो जाती है यथा—

खुदा के सिवा किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुशखबरी सुनाता हूं। कु० पा० ११ सू हूद, २॥

इसमें कुरान का लेखक खुदा से जुदा कोई अन्य व्यक्ति स्पष्ट है जो खुदा की ओर से डराने व खुशखबरी सुनाने की बात कुरान में कहता है और खुदा की ही पूजा का आदेश देता है!

कुरान का उपरोक्त उद्धरण यह बताता है कि इन आयतों तथा कुरान का लिखने वाला स्वयं खुदा नहीं था बल्कि कोई अन्य व्यक्ति था।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में कुरान की सूरते वार की पहली आयत को उद्धृत किया है जिसमें लिखा है :—

आरम्भ साथ नाम अल्लाह के क्षमा करने वाला दयालु--ऋषि ने इस पर लिखा है– मुसलमान लोग ऐसा कहते हैं कि यह कुरान खुदा का कहा है परन्तु इस वर्णन से विदित होता है कि इसका बनाने वाला कोई दूसरा है क्योंकि परमेश्वर का बनाया होता तो— आरम्भ साथ नाम अल्लाह के – ऐसा न कहता किन्तु आरम्भ वास्ते मनुष्यों के ऐसा कहता।

कुरान शरीफ की प्रमाणिकता पर जब लोगों ने सन्देह प्रकट किये तो खुदा की ओर से दो स्थानों पर उसके असली या नकली होने की जांच करने के लिये कसौटी (दो आयतें) उतारी गई जिनमें लिखा है :—

असली कुरान की कसौटी

और अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे जमीन के टुकड़े हो सकते, या उससे मुर्दे जी उठें।

और बोलने लगें तो वह यही होता--३१/कु० पा० १३ सूरते, राद रूक, ४ ॥

नोट :—कुरान की आयतों के संदर्भ में जो संक्षिप्त शब्द हैं उनकी परिभाषा निम्न है :—

कु	—	कुरान
पा	—	पारा (पैरा)
सू	—	सूरे या सूरत
आ	—	आयत (आयतें-श्लोक)
रु	—	रुकू

हमारी दृष्टि से इस कसौटी पर मौजूदा कुरान असली साबित नहीं हो सकता है। अगर कुरान से मुर्दे जिन्दा हो सकते तो संसार

में कोई भी मुसलमान मरना नहीं चाहिये था। पहाड़ों को तोड़ने के लिये कुरान का इस्तेमाल किया जाने लगता। पर कुरान के दावे के अनुसार ऐसा कुछ भी मौजूदा कुरान से नहीं होता है अतः वह असली साबित नहीं होता है।

कुरान बनाने का उद्देश्य

कुरान शरीफ क्यों बनाया गया था, इस विषय का स्पष्टीकरण स्वयं कुरान में ही दिया है। निम्न स्थल दृष्टव्य है :—

(खुदा ने कहा)—और हे पैगम्बर, हमने इस कुरान को इस वजह से उतारा है कि तुम मक्कावालों को और जो लोग उसके आसपास रहते हैं, उनको डराओ—६२ कु० पा० सू० अनआम रू० ११ ॥

और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस पास रहते हैं, उनको डरावे और कयामत के दिन की मुसीबत से डराये कु० पा० २५ सू० शूरा रू० १ आ० ७ ॥

इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि कुरान बनाने का मूल उद्देश्य मक्का और उसके निकटवर्ती स्थानों के निवासियों को डरा धमका कर इस्लाम में भर्ती करने का ही था। कुरान अरब वालों के ही लिये बनाया गया था न कि संसार भर के लोगों के लिये। अन्यत्र यह बात अधिक स्पष्ट रूप से कुरान में बताई गई है। कुरान में उसे डराने वाली पुस्तक बताया गया है न कि संसार का कल्याण करने वाली पुस्तक। और इसीलिये उसमें दोजख की बुद्धि विरुद्ध कल्पनायें पेश की गई हैं। दूसरे धर्म वालों, इस्लाम से भिन्न विचार

धारा या उपासना पद्धति के मानने वालों को हर तरह से परेशान करने तथा उनको कत्ल करने के उपदेश उनको कयामत के दिन दोजख में डाल कर तेज आग में भूनने के वर्णन कुरान में भरे हुए हैं।

जिस पुस्तक में परस्पर विरोधी आदेशों का वर्णन है। वह कभी भी खुदाई नहीं मानी जा सकती है। इस प्रकार की बातों के चन्द प्रमाण यहां उपस्थित किये जाते हैं। (१) (पक्ष) १ कु० पा० २४ सू० हामीम, सज्दह रू० ५ आ० ३-४ में लिखा है खुदा ने कहा "और नेकी और बदी बराबर नहीं। बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दें, तो तुझ में और जिस आदमी में दुश्मनी थी तू उसे पक्का दोस्त पायेगा" इसके विपरीत दूसरी जगह आदेश दिया है कि "ऐ इमान वालों, जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत" कु० पा० २ सू० बकर रू० २२ आ० १७८ ॥

पक्ष—"क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतान को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहे" कु० पा० १६ सू० मरियम रु ६ आ० ८३ ॥

विरोध—"शैतान की पैरवी न करो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। १६८ वह तुम्हें बदी और बेशर्म बनायेगा और यह चाहेगा की वे समझें खुदा के बारे में झूठे जंजाल गढ़े। १६९ कु० सू० बकर रु २१ पा० २ ॥

इसमें बुराई का बदला भलाई से देने के पक्ष में आदेश के विपरीत बुराई का बदला बुराई से देने का खुदा का आदेश है।

लड़ कर इस्लाम फैलाने के आदेश—

काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदा हो का दीन हो जावे ।

कु० पा० ९ सू० अन्फाल रू० ५ आ० ३९ ।।

हे पैगम्बर, देहाती जो पीछे रहे, उनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिये बुलाये जाओगे । तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जावें" कु० पा २६ सू० फतह रु २ आ १६ ।।

"किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं, और न कयामत को और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं, और न सच्चे दीन को मानते हैं, उनसे लड़ो यहाँ तक कि ज़लील होकर (अपने) हाथों से ज़ज़िया दे" कु० पा० १० सू० तोव रु ४ आ० २९ ।।

कल्मा कुरान में नहीं है

मुसलमान लोग कल्मा पढ़ते हैं "लाइलाहाइल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह" अर्थात् खुदा की इबादत करते समय उसके रसूल के रूप में ही मुहम्मद साहब की भी उपासना करते हैं जब कि सम्पूर्ण कुरान शरीफ में यह पूरा कल्मा कहीं भी एक जगह नहीं दिया गया है । यदि खुदा को मुहम्मद साहब की उपासना अपने साथ करानी स्वीकार होती तो वह यह कल्मा भी पूरा का पूरा कुरान में अवश्य दे देता । किन्तु ऐसा नहीं है । यहां तक कि कुरान में खुदा के साथ किसी भी अन्य की उपासना का कठोर शब्दों में निषेध विद्यमान है । निम्न प्रमाण दृष्टव्य हैं :—

(खुदा ने कहा)—खुदा के साथ किसी दूसरे की इबादत नहीं करना नहीं तो तुम दुर्दशा पाकर बैठे रह जाओगे। क़० पा० १५ सू० बनी इस्राइल रु २ आ० २२ ।।

इससे स्पष्ट है कि कल्मा खुदाई आदेश के विपरीत है। यह मुसलमानों ने स्वयं बना लिया है। ईश्वर सर्व व्यापक सत्ता है। कहने को तो सभी लोग यहां तक कि मुसलमान भी खुदा को हाजिर नाजिर मानते हैं, परन्तु कुरान में खुदा को एक देशीय सत्ता माना है। प्रमाण देखें :—

खुदा सर्व व्यापक नहीं है :—तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर तख्त पर जा विराजा। कु० पा० ८ सू० आराफ रु ७ आ० ५४ ।।

इस आयत के अनुसार खुदा तख्त पर बैठता है, सब जगह व्यापक नहीं है।

कुरान तौरेत व इन्जील और जबूर ग्रन्थों को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि कुरान कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है। उसमें लगभग सारी सामग्री अन्य ग्रन्थों से ही ली गई है तथा और भी उनमें कुछ लिखा गया है वह भी उन्हीं ग्रन्थों के आधार पर लिखा गया है। कुरान लेखक ने इस बात को छुपाया नहीं है वरन् उदारता पूर्वक कुरान में लिख भी दिया है। प्रमाण देखें :—

कुरान पुरानी किताबों की ही तफसील है

कुरान पारा ११ सू० यूनिस रू ५ आयत ३७ में लिखा है "यह किताब (कुरान) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय कोई उसे अपनी तरफ से बना लावे, बल्कि जो किताबें (तौरात, जबूर और

इञ्जील) इससे पहले की है उसकी तसदीक करती है और उन्हीं की तफसील है। इसमें सन्देह नहीं कि यह खुदा को ही उतारी हुई है।"

यह बात एक अन्य स्थल पर भी कही गई है। कु० पा० २४ सूरे हामीस सज्दह रू ५ आ० ४३ में लिखा है :—

कुरान में नई बातें नहीं हैं

"ऐ पैगम्बर, तुम से वही बात कही जाती है जो तुमसे पहले पैगम्बरों से कही जा चुकी है।"

कुरान के अध्ययन के समय ऐसे असंख्य स्थल उसमें मिलते हैं जो पुरानी उपरोक्त तीनों पुस्तकों (तौरात, जुबूर और इञ्जील) में नहीं मिलते हैं। अनेक ऐसे भी स्थल मिलते हैं जो उन पुस्तकों को मान्यताओं के विरुद्ध भी हैं।

पक्ष—क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता बेटा दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीव न पाये—(इञ्जीलयूहन्ना ३—१६ ॥

विरोध—जो लोग कहते हैं कि खुदा तो यही मरियम का बेटा मसीह है, यह लोग काफिर हो गये हैं—कु० पा० ६ सू० मायदा रू १० आ० ७२ ॥

खुदा कोई बेटा नहीं रखता। २ कु० पा० १८ सू० फकीने।

पक्ष—अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन हर जाति में से जो उससे डरता और धर्म के काम करता है वह उसे भाता है। प्रेरितों के काम १०/३५/

गुरु विरजानन्द ...
सन्दर्भ ...
5333
पु परिग्रहण क्रमांक ... 4198
दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र

मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। इञ्जील गलतियों ६।८।

विरोध-जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन की तलाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कबूल नहीं और वह नुक्सान पाने वालों में से होगा। २५ कु० पा० ४ सू० आल इमरान रू ९।

पक्ष—परन्तु मैं तुम सुनने वालों से कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो। जो तुमने बैर करे उसका भला करो। २७, इञ्जील लूका ६।

विरोध- मुसलमानों, अपने आस-पास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुम से सख्ती मालूम करे। १२३। कु० पा० ११ सू० तौबा रू १६ ॥

मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें, और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं है। २८। कु० प० सूरे० आल इमरान रू ३ ॥

क़समें खाना सभ्य समाज में अच्छा नहीं समझा जाता किन्तु कुरान में खुदा ने स्थान स्थान पर छोटी छोटी बातों की कसमें खाई ऐसा लिखा है। अंजीर और जैतुन की कसम। १। और नुरतीना पहाड़ की कसम। २। कु० पा० ३० सू० तीन ॥

लश्करों की कसम जो कतारों में खड़े होते हैं। १। फिर झिड़क कर डाटने वाले की कसम-कु० पा० २३ सू० सापफात।

हांफकर दौड़ने वाले घोड़े की कसम ।१। कु० पा० ३० सू० आदिमान ।

इस प्रकार की पचासों कसमें कुरान में खुदा ने अपनी जरा-जरा सी बातों की सच्चाई साबित करने को खाई हैं ।

कयामत कब आवेगी

कुरान शरीफ में कयामत (अलम) का बड़ा भय दिखाया गया है । कुरान में सैकड़ों ही आयतें कयामत के कल्पना पूर्ण वर्णन से भरी पड़ी हैं । अरब के लोग प्रलय की कल्पनाओं पर अविश्वास करते थे । और उससे भय खाते थे । किन्तु कुरान बनाने वाले को खुद भी कयामत कब होगी इसकी जानकारी नहीं थी ।

कुरान से स्पष्ट है कि कयामत में कुरानकार को कुछ भी नहीं ज्ञान था । और इसीलिये वह हर प्रश्न पर उसके करीब होने की बात कह कर टाल देता था । यदि कुरान खुदाई होता तो खुदा सही उत्तर देकर समाधान कर देता ।

कुरान में कयामत का वर्णन

कुरान में कयामत के दिन का वर्णन निम्न प्रकार दिया गया है :—

"(उस दिन) सूरज और चान्द ज़मा किये जायेंगे" कु० पा० २९, सू० कयामत० आ० ९ ।।

जब कि आसमान फट जाये । जब सितारे झड़ पड़ें । जब कब्र उखाड़ दी जाय । ४ । कु० पा० ३० सू० इन्फितार । जब जमीन तान दी जायेगी । जो कुछ हम में है बाहर डाल देगी और खाली

हो जायगी और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगी। कु० पा० ३० सू० इन्शिकाक़। उसी दिन वह अपनी खबरें सुनायेगी। (कु० सू० ज़िलज़ाल। पा० ३०। और जिस वक्त आसमान की खाल खींची जाय। ११। जिस वक्त सूरज लपेट लिया जाय। कु० पा० ३० सू० तकवीर)

—उस दिन आसमान पिघले तांबे की तरह हो जावेगा। और पहाड़ जैसे रंगी ऊन। ६। पा० ३० सू० प० मआरिज़

—जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तुमार में कागज लपेटते हैं। । १०४। कु० पा० १७ सू० अम्बिया रु० ७।

और सूर फूका जायगा तो कबरों से एक दम से निकल कर परवर्दिगार की तरफ चल खड़े होंगे। । ५१। पा० २३ सू० यासीय रू० ४।

दोज़ख का वर्णन

इसी प्रकार दोज़ख की भी कल्पना कुरान के ही शब्दों में दृष्टव्य है :—

—दोज़ख के सात दरवाजे हैं, हर दरवाजे के लिये दोज़खी लोगों की है टोलियां अलग-अलग होगी। कु० पा० १४ सू० हिज रू० ४। ४४१

काफिरों को कुफ्र की सजा में पीने को खौलता पानी और दुखदायी सजा होगी। कु० पा० ११ सू० तौवा आ १३ ॥

उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायगा। १६। जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जायेंगी। २०। पा० १७ हज्ज रु० ३ ॥

—(वहां) सैहुड़ का पेड़ उनका खाना होगा । ४४ । कु० पा० २५ सू० दुखान रू० ३ ।। और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही बदखत होंगे । १६ । इन को आग में डालकर किवाड़ भेड़ दिये जायेंगे । २० । कु० पा० ३० सू० बलद ।

सही मुस्लिम व तर्मिजी शरीफ में लिखा है कि दोजख की ७० हजार बागें होगी और सत्तर हजार फरिश्ते उसे खींच कर कयामत के दिन लावेंगे । तात्पर्य यह है कि वे सभी लोग जो मुसलमान नहीं होंगे अन्य प्रकार से ईश्वर के उपासक होंगे जिनको खुद मुहम्मद फरिश्ते और कयामत पर विश्वास नहीं होगा जो मूर्ति पूजक होंगे वे सभी दोजख में झोंके जावेंगे । परन्तु मुसलमान सभी जन्नत में जावेंगे ।

जन्नत का वर्णन

कुरान से ही इस्लामी जन्नत (स्वर्ग)का कुछ वर्णन प्रस्तुत है:—

"जो लोग इमान लाये और उन्होंने काम किये····उनके लिये बहिश्त के बाग हैं । जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और इनको एक ही तरह के वे खाने को मिला करेंगे और वहां इनके लिये बीवियां पाक साफ होंगी और वह इनमें सदैव रहेंगे ।२५ । कु० सु० बकर रू० ३ ।।

वहां सोने के कंगन पहनाये जायेंगे और वे महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे, वहां तख्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे । कु० पा० २५, सू० कहफ़ रू० ४ आ० ३१ ।

इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायगा । ४५ । सफेद रंग की पीने वालों को मजा देगी । ४६ । और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आंखों की औरतें होंगी । ४८ । गोया छिपे अंडे रखे हैं । ४९ । कु० पा० २३ सु० साफ्फात रू० २० ।

इनके पास नीची नजर वाली हूरें होंगी और हम उम्र होंगी । ५२ कु० पा० २३ सू० साद रू० ४ ।

इन पर सोने की रकाबियां और प्यालों की दौड़ चलेगी । ७१ । कु० पा० २५ सू० जुखरूफ रू० ७ ।

और बड़ी आँखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे । ५४। कु० पा० २५ सु० दुखान रू० ३ ।

जन्नत में शराब शहद व पानी की नहरें हैं । कु० पा० २६ सु० मुहम्मद रू० २, आ० १५ ।

जिस मेवे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको देंगे । २२। कु० पा० २७ सू० तूर २० ।

उसमें पाक हूरें होंगी जो आंख उठा कर नहीं देखेंगी और जन्नत वासियों से पहले न तो किसी आदमी ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने । ५६ । इनमें अच्छी खूबसूरत औरतें होगी । ७० । हूरें जो खीमे में बन्द हैं । ७२ । कु० पा० २७ सू० रहमान रू० ३ ।

यह सब सांसारिक भोग विलास की चीजें इस दुनियां में भी उपलब्ध है बल्कि उन्हें वे राजा महाराजा और बादशाह अधिक आसानी से प्राप्त कर लेते है जो धर्मात्मा न होकर अन्याय और अत्याचारी होते हैं । पर जन्नत में सभी मुसनमानों को खुदा देगा ।

स्व० सर मोहम्मद इकबाल ने अपनी शिकवा नामक प्रसिद्ध कविता में खुदा से निम्न प्रकार से शिकायत की है :—

कहर तो यह है कि काफिर को मिले हूरोकुसूर
और बेचारे मुसलमान को फक्त वादाए हूर।

ऐसा लगता है कि रेगिस्तानी अरब में रहने वाले लोगों के लिये इस्लाम के लिये लड़ने तथा अपनी जान तक कुर्बान करने के लिये यह चीजें विशेष प्रलोभन का काम करती रही हैं।

कुरान व उसकी समर्थक पुस्तकों में उपरोक्त वर्णन देख कर हम यही विचार कर सकते हैं कि जन्नत की कल्पना लोगों को इस्लाम में खीचने के लिये मन गढ़न्त (निराधार) बातों से अधिक मूल्य नहीं रखती है। और विश्वास योग्य नहीं हैं व बुद्धिमान लोग ऐसी बातें बताने वाली किताब को खुदाई किताब नहीं मान सकते है।

जन्नत पर एक मुस्लिम विद्वान् की सम्मति

कुरान के जन्नत के उपरोक्त वर्णन पर सर सैयद अहमद खां ने अपनी किताब—तफसो रूल्कुरान पृष्ठ ३३ भाग १ में निम्न प्रकार लिखा है, जो पठनीय है :—

यह समझना कि स्वर्ग एक बाग के रूप में उत्पन्न किया हुआ है और उसमें संगमरमर और मोती के जड़ाऊ महल हैं, बाग में सरसब्ज शादाब (हरे भरे वृक्ष हैं) दूध, शराब व शहद की नदियां बह रही हैं, और हर प्रकार की मेवा खाने को प्रस्तुत है। साकी व साकनीन (शराब पिलाने वाली) अत्यधिक खूबसूरत चान्दी के गहने (कंगन) पहिने हुए जो हमारे यहां की घोसिनी पहनती हैं,

शराब पिला रही है। और एक जन्नत वासी एक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है। एक ने रान पर सर रखा है, एक सीने से लिपट रहा है.....ऐसा बहूदापन है, जिस पर आश्चर्य होता है। यदि यही बहिश्त है तो विला मुवालिगा हमारे खरावात (वेश्यालय) इससे हजार गुना बेहतर है"।

"हो" से जगत की उत्पत्ति

खुदा के संसार की उत्पत्ति करने के बारे में कुरान का वर्णन विश्वास योग्य नहीं है। एक स्थान पर खुदा कहता है—जब हम किसी चीज को चाहते हैं, तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम फर्मा देते हैं "हो" और वह हो जाता है। पा० १४ सू० नहल० आ७ ४०

६ दिन में दुनिया बनी

तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है, जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर तख्त पर जा विराजा। कु० सू० आराफ रू ७ आ० ५४ या ८।

और हमने आसमानों को अपने हाथों के बल से बनाया। कु० पा० २७ सू० जारियात रू आ० ४७।

कुरान की चन्द विलक्षण बातें

अब कुरान की दो चार विलक्षण बातें भी देखली जावें। कुरान में लिखा है—हमने जमीन को फैलाया और हमने उसमें पहाड़ गाढ़ दिये—कु० पा० १४ सू० हिज्र आ० १९॥

पहाड़ जमीन में से उभर कर ऊपर निकलते हैं न कि बाहर बनाकर ऊपर से गाड़े जाते हैं। ले।

वही जिसने सूरज को चमकीला और चांद को रोशन बनाया— कु० पा० ११ सू० युनिस आ० ५ ।।

स्वयं चांद रोशन नहीं है, वह सूर्य के प्रकाश से रोशन हो जाता है। ले ।

"क्या जो लोग इन्कार करने वाले हैं, उन्होंने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों का एक पिण्ड था। सो हमने उसको तोड़ कर जमीन और आसमान को अलग किया।" कु० पा० १७ अम्विया रू० ३ आ० ३० ।

(निराकार शून्य आकाश और जमीन का पिण्ड बन ही नहीं सकता, फिर जब आसमान और जमीन पहले से ही मौजूद थे तो खुदा ने उनको बनाने का दावा क्यों किया ?)

"सूरज और चान्द को जो चक्कर खाते हैं एक दस्तूर तक तुम्हारे काम में लगाया और रात दिन को तुम्हारे अधिकार में कर दिया।" कु० पा० १३ सू० इबराहीम रू० ५ आ० ३३ ।

(किसी का सूरज चक्कर नहीं लगाता है और न सूरज और चांद हमारे ही काम के लिये बनाये गये हैं। उनकी उत्पत्ति विश्व निर्माण एवं उसकी स्थिति के निमित्त है तथा प्राणी जगत के जीवन का कारण है।)

★

आर्य समाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

सुन्दर, सरल और सस्ते साहित्य प्रचार की योजना में सहयोग दीजिये

आर्य समाज के निष्ठावान विद्वान डा. सूर्यदेवजी की 12 हजार रुपयों की उदार सहायता के कारण आर्य समाज, अजमेर ने पचास हजार रुपये व्यय करके सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला के 15 भागों की 75 हजार प्रतियाँ लागत से भी कम मूल्य पर वितरित की हैं। इसी प्रकार इस ग्रन्थ माला के दूसरे संस्करण और आर्य समाज अजमेर द्वारा अपनी स्थापना तथा ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी अवसर पर निम्नलिखित अत्यन्त उपयोगी साहित्य के लिये आप भी आर्थिक सहायता देकर उसके प्रचार में योगदान करें :—

1. स्व. लाला लाजपतराय की प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक—"दी आर्य समाज" का पहली बार प्रकाशित होने वाला हिन्दी संस्करण।

   अनुवाद—डा. भवानीलाल भारतीय।

   आर्य समाज—हिन्दु विदाऊट हिन्दुइज्म (The Arya Samaj. Hindu without Hindusium) प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक प्रकाशक विकास द्वारा मुद्रित प्रिन्सिपल दत्तात्रेय वाळ्ले द्वारा लिखित क्रान्तिकारी मौलिक अंग्रेजी ग्रन्थ।

   सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला का दूसरा संस्करण।

   इसी ग्रन्थ माला के समान ऋषि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में हिन्दी अंग्रेजी के ट्रेक्टस।

   स्वामी जी के पत्र व्यवहार पर आधारित उनके कार्य और विचारों का संकलन।

   आर्य समाज अजमेर के गत 100 वर्षों का इतिहास जिसमें ऋषि दयानन्द के अन्तिम वर्षों से सम्बन्धित समाज के अभिलेखों से प्राप्त विवरण।

(2) उपरोक्त प्रकाशन में आर्थिक सहायता देने वाले सज्जनों के संबन्ध में प्रत्येक पुस्तक में निम्न प्रकार से उनके प्रति आभार व्यक्त किया जावेगा:—

(1) एक सौ रुपये से पांच सौ रुपये तक दान दाताओं के नामों का उल्लेख।

(2) 500 रुपये से 3000 तक देने वाले दाताओं का संक्षिप्त परिचय।

(3) तीन हजार से ऊपर देने वाले दाताओं का चित्र और परिचय।

दयानन्द स्नातकोतर कालेज अजमेर में दयानन्द शोध तथा प्रकाशन संस्था के लिये 500 रुपये या अधिक दान दाताओं के नाम प्रत्येक प्रकाशन तथा शिला लेखों में अंकित किया जावेगा।

लेखक का परिचय

इस पुस्तिका के लेखक डॉ. श्रीराम आर्य, आर्य समाज के पुराने जाने माने विद्वान् लेखक हैं। कुरान और इस्लाम धर्म पर आपका गहन और दीर्घ अध्ययन है। वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज ऐटा (उत्तर प्रदेश) के तत्वावधान में आपने छोटी-मोटी अपनी लिखी लगभग 80 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। कुरान की छानबीन, कुरान प्रकाशन, बाईबिल दर्पण आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
ग्रन्थ क्रमांक 5333
... महिला महाविद्यालय, ...